6

प्रकृति माँ

28/6/21

Explain

घ. सूरज के उदय होने से वातावरण कैसा हो जाता है?

पाठ-6 पुस्तक अभ्यास 29/6/21

3. सही उत्तर पर ✓ लगाओ—

क. माँ के समान कौन लगती है?

i. नदी ☐ ii. पेड़ ☐ iii. प्रकृति ✓

ख. किसकी लहरें इतराती हैं?

i. तालाब की ☐ ii. सागर की ☑ iii. नदी की ☐

4. **सही शब्द लिखकर वाक्य पूरे करो—**

क. नीलगगन का है विस्तार,
ढँक लेता सारा संसार।
सूरज की छाई है लाली,
चहुँ ओर फैली उजियाली।

ख. जितना हमको देती प्रकृति,
उसका ऋण न सके उतार।
हम है प्रकृति माँ के बेटे,
करती है हम पर उपकार।

इन पर विचार करो

1. प्रकृति की रक्षा के लिए आप क्या-क्या कर सकते हैं? सोचकर बताइए।
2. नदी, पेड़-पौधे, फूल-फल भी हमें कुछ शिक्षा देते हैं। सोचो और बताओ।

प्रशंसा-योग्य

- प्रकृति माँ के समान अपना सर्वस्व देकर हमारा पालन-पोषण करती है। प्रकृति के असंख्य उपकारों से ही हमारा जीवन सुचारू रूप से चलता है। हम प्रकृति के उपकारों का ऋण कभी नहीं चुका सकते, किंतु प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रकृति के प्रति अनुशासित व्यवहार अवश्य कर सकते हैं। प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का यही सर्वश्रेष्ठ आचरण है कि हम अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रकृति को हानि न पहुँचाएँ।
- इस कविता में प्रकृति को माँ के समान पालन करने वाली बताया गया है। प्रकृति हम पर अनेक उपकार करती है। प्रकृति के उपकारों के प्रति कृतज्ञ रहते हुए हमारा कर्तव्य है कि हम प्रदूषण पर नियंत्रण करके प्रकृति की रक्षा करें। अधिक-से-अधिक पेड़ लगाकर हम इसकी शुरुआत करें।

जानी-अनजानी बातें

- पूरे ब्रह्मांड में पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है, जहाँ जीवन है।
- इस ग्रह का निर्माण 4.54 अरब वर्ष पूर्व हुआ था।
- पृथ्वी पर सबसे ऊँचा पर्वत माउंट एवरेस्ट है। यह समुद्रतल से लगभग 8,848 मीटर ऊँचा है।

भाषा से

श्रुतलेख

प्रकृति, बिलकुल, इतराती, ढँक, चहुँ, ऋण, माँ, उपकार

1. दिए गए शब्दों के समान ध्वनिवाले शब्द कविता में से ढूँढ़कर लिखो—

गाते — लहराते

विस्तार — संसार

जाती — इतराती

लाली — उजियाली

उतार — उपकार

2. सही पर्यायवाची शब्द चुनकर लिखो—

सरिता समुद्र कर्ज़ जननी सूर्य दुनिया

क. माँ — जननी

ख. नदी — सरिता

ग. सूरज — सूर्य

घ. संसार — दुनिया

ङ. सागर — समुद्र

च. ऋण — कर्ज़

3. नीचे दिए शब्दों को उचित लिंग से मिलाओ—

प्रकृति, सागर, माँ

पुल्लिंग, स्त्रीलिंग

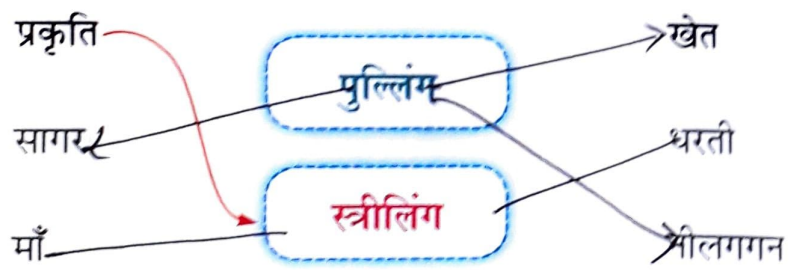

खेत, धरती, नीलगगन

4. नीचे दिए शब्दों का ऊँचे स्वर में उच्चारण करो तथा वाक्य बनाओ—

प्रकृति — प्रकृति ईश्वर का दिया अमूल्य उपहार है।

झरने — झरने कल-कल करके बह रहे हैं।

विस्तार — नीलगगन के विस्तार ने सारे संसार को ढक लिया है।

चहुँ ओर — चहुँ ओर अँधेरा छाया था।

ऋण — मैं तुम्हारे उपकार का ऋण नहीं चुका सकता।

उपकार — वृक्ष धरती को हरा-भरा रखकर उपकार करते हैं।

प्रस्तावित गतिविधियाँ

1. जीव-जंतु और कीड़े-मकोड़ों से भी हम कुछ-न-कुछ सीखते हैं। उनके जीवन के बारे में जानो और लिखो।
2. कविता में वर्णित प्रकृति के उपादानों के चित्र स्क्रैप बुक में चिपकाकर उनके बारे में दो-दो पंक्तियाँ लिखो।
3. चार-चार विद्यार्थियों के समूह में बँटकर एक लघु नाटिका तैयार करो, जिसमें समूह के सभी विद्यार्थी प्रकृति का एक-एक रूप धारण करें और अपने-अपने गुणों का बखान करें।
4. प्रकृति से संबंधित कोई कविता सस्वर सुनाओ। सहायता के लिए नीचे लिखे weblink पर जाओ— https://hindividya.com/nature-poems/.
5. नीचे दिए चित्र में रंग भरो—

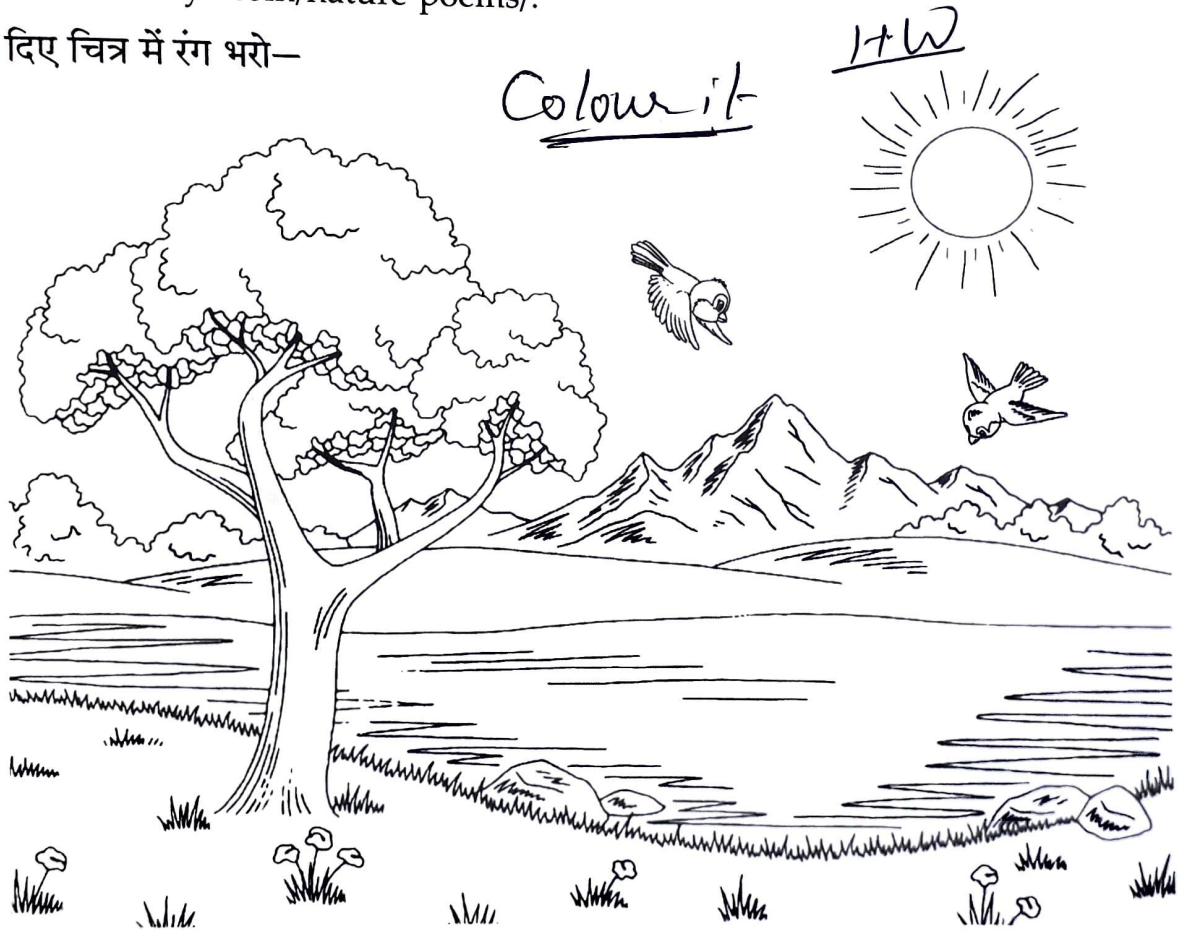

हमने क्या सीखा

1. प्रकृति से प्रेरणा लेकर हमें सदैव अच्छे कर्म करने चाहिए। ☐
2. प्रकृति हमारी सबसे बड़ी गुरु है, जो हमें स्वार्थ छोड़कर परोपकार करने की सीख देती है। ☐